अगस्त १९८९ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित
अभिलाषाएं पूर्ण हुईं
भगवान बुद्ध के जीवन काल की घटना।

मगध देश का राजा बिम्बिसार धार्मिक विचारों का व्यक्ति था। उसकी राजधानी राजगृह में जो संत संन्यासी आते उनकी आवभगत करता, उन्हें सम्मानित करता, उनके धर्मोपदेश सुनता और प्रचुर दान-दक्षिणा देता।

एक दिन वह अपने राजमहल के बरामदे में खड़ा था। सामने राजपथ पर कुछ लोगों की भीड़ भाड़ देखी और देखा कि एक भला संन्यासी नीची नजर किए हुए नपे-तुले कदमों से राजपथ पर चला जा रहा है। उसने फटे पुराने गेरूए वस्त्र पहन रखे हैं। किसी घर के सामने भिक्षा पात्र लिए नीची नजर किए हुए रुकता है। गृहस्वामिनी उसे भिक्षा देकर अपने आप को कृतार्थ मानती है। उसकी ओर एक टक देखती रह जाती है। और भी पथ पर चलने वाले लोग इस संन्यासी को देखते हैं तो निर्निमेष देखते ही रह जाते हैं। मटमैले फटे चिथड़े की वेशभूषा उसके राजसी व्यक्तित्व को छिपाने में सर्वथा असमर्थ थी। जो देखता वही उसकी ओर आकर्षित हो जाता। इसीलिए उसके इर्द-गिर्द लोगों की भाड़ थी।

राजा बिम्बिसार भी उसके इस चुम्बकीय व्यक्तित्व के प्रति खिंच गया। उसने संन्यासी के पीछे अपने दूत भेजे –यह जीनने के लिए कि वह भिक्षाटन के बाद कहां टिकता है? दूतों ने सूचना दी कि वह नगर के कोलाहल से दूर पाण्डव पर्वत पर भोजन करने बैठा है। राजा ने अपना मुकुट पहना और कुछ मांत्रियों के साथ गंतव्य स्थान पर पहुंचा। तब तक युवा संन्यासी भिक्षा-आहार ले चुका था। उसे इतने समीप से देखते हुए राजा बिम्बिसार ठगा सा देखता ही रहा गया। उसके अलौकिक सौंदर्य पर राजा की दृष्टि बँध गयी। ऐसा भव्य व्यक्तित्व उसने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। सिर के सिरे पर एक उपशीर्ष, जिस पर छोटे छोटे कटे हुए सुंदर घुंघराले काले बाल जो उसे एक जटा का आभास दे रहे थे। चौड़ा ललाट, धनुष सदृश काली लम्बी भौहों के बीच उगे हुए थोड़े से श्वेत बाल अपनी अनोखी भव्यता प्रकट कर रहे थे। बड़ी बड़ी आंखे जिनमें पवित्रता उमड़ रही थी। लंबा नाक ,शेर की सी खूबसुरत ठोड़ी, उन्नत स्कंध, चौड़ी छाती, आजानुबाहु, मुखमण्डल पर अपूर्व शांति और कांति, चेहरे के इर्द-गिर्द एक ओजस्वी प्रभामंडल।

राजा ने सोचा यह अवश्य ही किसी कुलीन घराने का व्यक्ति है और किसी ऊंचे उद्देश्य से इसने अपना घर त्यागा है। यकायक उसके मन में बिजली सी कौंधी कि कहीं यह राजकुमार सिद्धार्थ गौतम तो नहीं?

सिद्धार्थ का पिता महाराज शुद्धोधन और बिम्बिसार का पिता परस्पर परम मित्र थे। अपने पिता से ही बिम्बिसार ने शाक्य कुल की बड़ी ख्याति सुनी थी। उसने यह भी सुना था कि महाराज शुद्धोधन के घर एक राजकुमार जन्मा है जिसके शारीरिक लक्षणों को देखकर देश के प्रसिद्ध ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी कि यदि वह गृहस्थ रहा तो चक्रवर्ती सम्राट होगा और विरक्त हुआ तो सम्यक् सम्बुद्ध होगा। समवयस्क होने के कारण, राजदूतों के माध्यम से उसने स्वयं भी सिद्धार्थ से मैत्री संबंध स्थापित किए थे। कहीं यह राजकुमार सिद्धार्थ ही तो नहीं। श्रेणिक बिम्बिसार ने कौतूहल मिटाने के लिए पूछा,

"योगीराज! क्या आप शाक्य पुत्र सिद्धार्थ हैं?"

"हां ऐसा ही है महाराज!"

तरुण गृहत्यागी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। बिम्बिसार का तन मन रोमांचित हो उठा। तपस्वी के प्रति उसके मन में बड़ा अपनत्व भाव उमड़ा। उसने भाव विभोर होकर कहा, 'मित्र, भिक्षु का जीवन तुम्हारे अनुकूल नहीं है। तुम्हारा जीवन तो राज्य-संचालन के उपयुक्त है। तुम शाक्यवंशीय राज्य छोड़ आए तो छोड़ आए। आओ! मैं तुम्हें अपने राजसी ऐश्वर्य में भागीदार बनाने के लिए प्रस्तुत हूं।'

शाक्यों के गणतंत्रीय राज्य के मुकाबले अंग-मगध का एकतंत्रीय साम्राज्य कहीं अधिक विशाल और प्रभुतासंपन्न था। पर यह प्रस्ताव उसे नहीं भाया। संन्यासी सिद्धार्थ ने इसे मुस्कुराते हुए दृढ़तापूर्वक ठुकरा दिया। जिस राजवैभव के आकर्षण को मलमूत्र की तरह त्यागकर आ गया था, उसे पुनः कैसे स्वीकार करता? वह तो परम सत्य की खोज में निकला था। मुक्ति के शाश्वत ऐश्वर्य का अन्वेषक। उसके लिए यह वृहद् पर भंगुर राजसी ऐश्वर्य तुच्छ और त्याज्य ही था।

श्रेणिक बिम्बिसार ने सिद्धार्थ का निश्चय दृढ़ देखा तो श्रद्धाविभोर हुआ और हाथ जोड़कर बोला, 'आपको शीघ्र सम्यक् सम्बोधि प्राप्त हो, यही मेरी मंगल कामना है। परन्तु साथ ही एक प्रार्थना भी है कि बोधि प्राप्त होने पर मेरे इस नगर को और मुझे कृतार्थ करने के लिए और मुक्ति के मार्ग का उपदेश देने के लिए यहां अवश्य आएं!'

सिद्धार्थ ने मुस्कराते हुए स्वीकृति दी।

बिम्बिसार भावविभोर हो अपने महल लौटा। मन में यही प्रश्न उठता रहा कि क्या कुमार सिद्धार्थ सचमुच सम्यक् सम्बुद्ध होगा?

आजकल अनेक आचार्य इस बात का दावा करते हैं कि वे बुद्ध हो गए हैं। पर कौन जाने सचमुच बुद्ध हुए हैं या नहीं? परन्तु लगता है यह व्यक्ति तो अवश्य बुद्ध होगा। इसके बारे में तो शीर्षस्थ ज्योतिषियों की भविष्य वाणी भी है और इसका ऐसा अप्रतिम भव्य व्यक्तितत्व है।

छह वर्ष बीतते बीतते गौतम सम्यक् सम्बुद्ध बने। उन्होंने स्वयं अमृत का साक्षात्कार किया। संसार के दुखियारे लोगों के लिए भी अमृत के दरवाजे खुलें, ऐसी अनंत करुणाजन्य अन्तर्चेतना जागी और धर्मचक्र प्रवर्तन करने के लिए ऋषिपत्तन मृगदाय पहुँचे। यहां उनके पांच पूर्व साथी धर्म का लाभ लेकर अर्हंत हुए। भगवान ने वहीं उनके साथ वर्षावास किया।

वर्षावास के दौरान वाराणसी का धनी वणिक पुत्र और उसके ५४ साथी संगी भगवान के संपर्क में आए और विपश्यना साधना व्दारा अर्हत्व फल प्राप्त किया। वर्षावास के बाद धर्मचारिका आरंभ हुई। ६० अर्हंत भिक्षुओं को चारिका के लिए अन्य अन्य स्थानों पर भेजा ताकि वे अधिक से अधिक लोगों पर अनुकम्पा करते हुए उनके हितसुख के लिए शुद्ध धर्म का ज्ञापन करें। भगवान स्वयं भी इसी निमित्त बोधगया लौट आए। वहां उरुवेल काश्यप, नदी काश्यप और गया काश्यप नामक तीन अग्निहोत्री भाइयों का उनके एक हजार शिष्यों सहित उद्धार किया। वे सभी शुद्ध धर्म की अन्तर्साधना करके परम मुक्त अवस्था को प्राप्त हुए।

मगध नरेश श्रेणिक बिम्बिसार को दिया हुआ वचन भगवान बुद्ध को याद था। उसे पूरा करने के लिए वह इस बृहत् संघ के साथ राजगृह पहुँचे।

बिम्बिसार ने सुना तो अत्यंत श्रद्धा विनीत हो अपने मंत्रियों, राजदरबारियों और नगर के प्रमुख ब्राह्मणों और श्रेष्ठियों को साथ लेकर भगवान के दर्शनों के लिए यष्ठिवन पहुँचा, जहां भगवान रुके हुए थे।

उरुवेल काश्यप मगध देश का परम पूज्य धर्माचार्य था। बहुत बड़ी संख्या में लोग उसके शिष्य, अनुयायी और भक्त थे। वे यह देखकर आश्चर्य चकित हुए कि ऐसा लब्धप्रतिष्ठ धर्माचार्य अपने दोनों छोटे भाइयों और उनके एक हजार शिष्यों की बृहद् मंडली को लिए हुए श्रमण गौतम के साथ क्यों है?और इन सब ने अपना वेश क्यों बदला है? सिर पर की राख मली हुई गांठ-गठीली जटाएं, दाढ़ी और मूछ सब क्यों मुंड़वा ली है? क्या यह सब श्रमण गौतम के शरणागत शिष्य हो गए है? अथवा श्रमण गौतम ही इनका शिष्य हो गया है?

उनके मन की इस शंका का निवारण करते हुए उरुवेल काश्यपने उपस्थित जन समुदाय के सामने भगवान को नमस्कार किया और स्वयं उनका शिष्य होना प्रकट किया। उसने यह उद्घोषणा की, "यह भगवान हैं, अर्हंत हैं, सम्यक्सम्बुद्ध हैं, विद्या और आचरण दोनों में सम्पन्न हैं, सुगत हैं। सारे लोकों के जाननहार हैं, सर्वज्ञ हैं। जैसे बिगड़े हुए घोड़ो को कोई कुशल सारथी वश में करके सुधार लेता है वैसे ही यह भी बिगड़े हुए लोगों को सुधारने में बेमिशाल हैं। यह देवताओं और मनुष्यों के शास्ता हैं, शिक्षक हैं ऐसे हैं ये भगवान बुद्ध!"

ऐसा सुनकर श्रेणिक बिम्बिसार सहित सारी श्रोतामंडली भगवान के चरणों में श्रद्धा से झुक गयी। भगवान ने अपनी अमृतवाणी से उन्हें धर्म की आनुपूर्विक देशना दी। शुद्ध धर्म की प्रारंभिक रूप-रेखा समझाते हुए जब देखा कि लोगों के चित्त ऋजु हैं और ग्रहण करने योग्य हैं तो उन्हें चार आर्य सत्यों की गंभीर देशना दी। दुःख के कारण और उसके निवारण का मार्ग समझाते हुए विपश्यना विधि समझाई। बिम्बिसार सहित जो जो पूर्व पारमी संपन्न थे उनका चित्त एकाग्र हुआ। भीतर पंचस्कंध के उदय-व्यय की अनुभूति होने लगी और ऐसा होते होते एक एकइंद्रियातीत परम सत्य की अनुभूति हुई; जो नित्य है, ध्रुव है। जहां न कुछ उदय होता है और न व्यय। उत्पाद व्यय वाले लौकिक क्षेत्र का जहां पूर्णतया निरोध हो जाता है। उन सब ने प्रत्यक्ष अपने अनुभव से जाना कि सारा नाम-रूप का पंचस्कंधीय क्षेत्र जो समुदय धर्मा है वह इस अवस्था में पूर्णतया निरुद्ध हो जाता है। अतः जो उत्पन्न धर्मा है वह निरोध धर्मा ही है। यह सत्य प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर लिया। यों पहली बार अमृतदर्शी हुए तो अनार्य से आर्य हो गये। स्त्रोतापन्न हो गये। मुक्ति के स्त्रोत में पड़ गये। अब दुनिया की कोई शक्ति उन्हें मुक्त होने से रोक नहीं सकती।अब उनकी अधोगति सदा के लिए निरुद्ध हो गयी। मनुष्य, देव या ब्रह्मलोकों में अधिक से अधिक ७ जन्म लेकर अंततः सर्वथा विमुक्त अर्हंत पद पाने के अधिकारी हुए। स्रोतापन्न की ऐसी अवस्था प्राप्त हुई जहां व्यक्ति किसी शील या व्रत की अतियों में जाकर उनके द्वारा ही मुक्त हो जाने की सारी भ्रामक आसक्तियां छोड़ देता है, जहां इस शरीर और चित्त के प्रपंच के प्रति 'मैं मेरे की मान्यता टूट जाती है और जहां मार्गदर्शक और मार्ग के प्रति सारी शंकाएं विदीर्ण हो जाती हैं। क्योंकि साधक प्रत्यक्ष अनुभूति द्वारा परम सत्य को जानकर स्वीकार करता है।

अनार्य अवस्था से ऐसी आर्य अवस्था प्राप्त हो जाने पर सभी कृतज्ञता विभोर हो उठे। श्रेणिक बिम्बिसार ने अपनी अपरिमित श्रद्धा प्रकट करते हुए कहा,

"आश्चर्य है भन्ते भगवान! अत्यंत अश्चर्य है! अत्यंत अद्भुत है आप की धर्मदेशना! जैसे कोई औंधे को सीधा कर दे, ढके को उघाड़ दे,भूले भटके को रास्ता दिखा दे। अँधेरे में प्रकाश का दीपक जला दे ताकि जिनके आंखे हैं वे रास्ता देख सकें। आपने भीतर की ऐसी सच्चाई दिखाई जो अब तक अज्ञात थी। आज से मुझे बुद्ध के प्रति और उनके सिखाए हुए धर्म के प्रति और उस धर्म पथ पर चलकर निर्मलचित्त हुए साधक संघ के प्रति आजीवन शरणागत मानें और अपना उपासक स्वीकारें!"

राजा बिम्बिसार ने समस्त भिक्षु संघ सहित भगवान बुद्ध को अगले दिन के भोजन के लिए आमंत्रण दिया। भगवान ने मौन रहकर स्वीकृति दी।

कृतज्ञता के मोदभरे शब्दों में श्रेणिक बिम्बिसार ने कहा,

"भन्ते भगवान! मैं कितना भाग्यशाली हूं! जब मैं राजकुमार था तो मेरे मानस में पांच बड़ी अभिलाषाएं जागीं और वे पांचों की पांचों पूरी हुईं।

पहली अभिलाषा यह थी कि मेरा राज्याभिषेक हो।

दूसरी अभिलाषा यह थी कि मेरे शासनकाल में ही कोई व्यक्ति सम्यक्सम्बुद्ध बने और उसका मेरे राज्य में पदार्पण हो।

तीसरी अभिलाषा यह थी कि मैं उनका अभिनंदन-अभिवादन कर सकूं।

चौथी अभिलाषा यह थी कि वह भगवान बुद्ध मुझे धर्मोपदेश करें।

और मेरी पांचवी तथा सबसे बड़ी अभिलाषा यह थी कि मैं भगवान बुद्ध के उपदेशों को हृदयंगम कर सकूं। ऐसा ही हुआ भन्ते भगवान!

मेरी पांचों तमन्नाएं पूरी हुईं। सचमुच मैं बड़ा भाग्यशाली हूं। श्रेणिक बिम्बिसार सचमुच बड़ा भाग्यशाली था।

मंगल मित्र,
स.ना.गो